TEACHER'S HANDBOOK

हिंदी व्याकरण–8

उत्तर पुस्तिका

FRANKLIN

सृष्टि हिन्दी व्याकरण-8

PART - 8

Ch-1 (भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण)

(क) (क) एक सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को उपभाषा कहा जाता है।

(ख) भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।

(ग) मगही, भोजपुरी, अंगिका।

1. (क) भाषा का माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मन के भावों और विचारों को दूसरे के सामने प्रकट कर सकते हैं और दूसरे के मन के भावों और विचारों को स्वयं समझ सकते हैं।

   (ख) 14 सितंबर 1949 में देवनागरी लिपि में हिंदी को भारत की अधिकारिक भाषा घोषित किया गया था। जिस कारण हम सब प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को देश में हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

   (ग) प्रत्येक 10 जनवरी को अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री डॉ मनमोहन सिंह द्वारा वर्ष 2006 में अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस की घोषणा एवं शुरुआत की गई थी।

   (घ) भाषा द्वारा हम अपने बात दूसरों को बताते हैं तथा दूसरों की बात स्वयं समझते हैं। और दूसरी ओर भाषा का ऐसा स्वरूप जो छोटे क्षेत्र में बोलने के लिए प्रयोग में लाई जाती है, उसे बोली कहते हैं।

2. जापानी, कानजी(चीनी मानचित्र) — रोमन लिपि
   चीनी(भावचित्र) — रोमन
   ब्राह्मी — मलयालम
   देवनागरी — गुरुमुखी

3. (क) मौखिक (ख) सांकेतिक (ग) लिखना (घ) बोलकर (ङ) मौखिक

4. लिखित, भाषा को ठीक करना, गलती में सुधार करना, तीन, दो

5. Do it yourself 6. Do it yourself

Ch-2 (वर्ण विचार)

(क) (क) वर्ण जहां मूल ध्वनि है जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते।

(ख) हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण होते हैं।

(ग) स्वर के तीन भेद होते हैं।

ह्रस्व स्वर दीर्घ स्वर प्लुत स्वर

1. (क) ऐसे वर्ण जिन्हे स्वर की सहायता से उच्चारित किया जाता है, व्यंजन कहलाते है।

(ख)जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती है अर्थात वे स्वतंत्र वर्ण होते हैं, उन्हें स्वर्ण कहते हैं।
जैसे; अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

(ग)जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती हैं वे स्वर कहलाते हैं। तथा जिन्हें स्वर की सहायता उच्चारित किया जाता है, व्यंजन कहलाते हैं।

(घ) स्वर अनुनासिक होते हैं, मिनी स्वर तथा व्यंजन दोनों के ऊपर चंद्र बिंदु के रूप में लगाया जाता है।
जैसे; काँव, गाँव, बाँध आदि।

2. 1.अ, इ, उ, ऋ 2. आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ 3. अं, अः
3. संयुक्त व्यंजन में जो पहला व्यंजन होता है वो हमेशा स्वर रहित होता है और इसके विपरीत द्वित्व व्यंजन हमेशा स्वर सहित होता है।
4. (क)✓ (ख)× (ग)× (घ)✓
5. कुआँ, आँवला, गंगा, दर्द
6. Do it yourself 7. Do it yourself

Ch-3 (शब्द विचार)

(क) वर्णों के मेल से बनाई गई सार्थक इकाई को शब्द कहते हैं।

(ख) शब्द के पांच भेद होते हैं
वाक्य में प्रयोग के आधार पर — रचना के आधार पर
उत्पत्ति के आधार पर — अर्थ के आधार पर
व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर

1. (क) वाक्य में व्याकरणिक नियमों के अनुसार रखे गए शब्द 'पद' कहलाते हैं।
(ख) ऐसे शब्द जिन्हें शब्द जिन्हें संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में लिया है, उन्हें तत्सम कहते हैं तथा वे शब्द जो मूल का संस्कृत के हैं किंतु हिंदी में उनका स्वरूप विकृत होकर प्रयोग किए जाते है, तद्भव शब्द कहलाते है।
(ग) रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं:
1.रूढ़ शब्द 2.यौगिक शब्द 3.योगरूढ़ शब्द
(घ) अविकारी शब्द के 6 भेद होते हैं
क्रिया, विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक विस्मयादिबोधक, निपात
(ङ) निपात वाले शब्द वाक्य में जिस भी पद के आगे जोड़ते हैं उसके अनुसार वाक्य के अर्थ को बल प्रदान करते हैं। जैसे; मैं कोलकाता भी जाऊंगा।

2. रूढ़-दिन, सुबह, पंकज, लड़का
यौगिक-दोपहर, गौशाला, हरिद्वार, हिमालय, घुड़दौड़
योगरूढ़-पितांबर, दशानन, एकदंत

3. ऐसे शब्द जिनका कुछ ना कुछ अर्थ जरूर होता है वह सार्थक शब्द कहलाते हैंजैसे; पानी, पेड़, चीनी, आदि तथा ऐसे शब्द जिनका न तो कोई अर्थ होता है न ही कोई वस्तु उसके अनुरूप होती है, उसी निरर्थक शब्द कहते हैं। जैसे; खट-खट, चांय-चांय आदि।

4. (क) ■, ■, ■, ●

(ख) ■, ■, ●, ■

(ग) ■, ■, ■, ●

(घ) ■, ■, ■, ■

(ङ) ■, ■, ●, ●

5. तत्सम-हस्त, अग्नि, दुग्ध, सर्प, कटि

तद्भव-जीभ, आग, आने, हाथ, पानी, आंसू

विदेशी-मेट्रो, इस्पात, आदमी, मोबाइल, बैंग

6. केवल साग-सब्जी खाने वाला - शाकाहारी

केवल फल फूल खाने वाला - फलाहारी

किसी की बात मानने वाला - आज्ञाकारी

सगे भाई-बहन - सहोदर

7. संज्ञा- रुपया, घर, मोहन, वृक्ष, ग्राम, कार

सर्वनाम-मैं, तुम, वह, हमारा, तुम्हारा, सबका

विशेषण-खुशबूदार, धनी, इमानदार, परिश्रमी सुरीला सुंदर

क्रिया -आना, जाना, करना, गया, गई, गए

8. लड़का चांद गहने मनुष्य

9. Do it yourself 10. Do it yourself

Ch-4 (संज्ञा)

(क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव आदि के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा , भाववाचक संज्ञा, समूहवाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा।

(ग) ऐसे संज्ञा शब्द जिनके द्वारा विविध पदार्थों या धातुओं का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे; आजकल सोना महंगा हो गया है।

1. (क) ऐसे शब्द जिन से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम का पता चलता है, उन्हें संज्ञा कहा जाता है।

(ख) संज्ञा के पांच भेद होते हैं।

2. खेत, हरियाली - भाववाचक संज्ञा
डॉ कलाम - व्यक्तिवाचक संज्ञा, राष्ट्रपिता- जातिवाचक संज्ञा
हरियाली- भाववाचक संज्ञा
3. व्यक्तिवाचक- संज्ञा महेश, भारत
जातिवाचक -संज्ञा पतंग, पहाड़, कैरेट
भाववाचक संज्ञा- हंसी, रुलाई
समूहवाचक संज्ञा- गुच्छा, दर्जन,
द्रव्यवाचक- संज्ञा सोना,
4. दानवीर, शिष्यत्व, हरियाली, नेतृत्व, सुगमता, सफलता, सर्वज्ञ, महानता, कालापन
5. व्यक्तिवाचक संज्ञा- विद्यालय, कुर्सी, दिल्ली, गंगा, पेड़, गड्डी
जातिवाचक संज्ञा- हिमालय, नदी, कैरेट, लंगड़ा आम
भाववाचक संज्ञा- हरियाली, क्रोध, हंसी, सफलता, लड़ाई
समूहवाचक संज्ञा- सांसद भवन गुच्छा, पंसेरी, दर्जन
द्रव्यवाचक संज्ञा - तेल, पारा, पानी चांदी, दूध
6. Do it yourself. 7. Do it yourself.

Ch-5 (लिंग)

(क) लिंग जिन शब्दों से पुरुष जाति अथवा स्त्री जाति का बोध होता है, वे लिंग कहलाते हैं।

(ख) लिंग के दो भेद होते हैं, पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग
ऐसे शब्द जिनसे केवल पुरुष जाति होने का बोध होता है, वह पुल्लिंग कहलाते हैं।
ऐसे शब्द जिनसे जिनसे स्त्री जाति होने का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

1. (क) शब्द के जिस रूप से स्त्री अथवा पुरुष जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं।
(ख) लिंग के दो भेद होते हैं, पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग
पुल्लिंग - ऐसे शब्द जिनसे केवल पुरुष जाति होने का बोध होता है वह पुल्लिंग कहलाते हैं।
जैसे - तोता, मोर, लड़का आदि।
(ग) ऐसे शब्द जिनसे केवल स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।
जैसे; बकरी, मुर्गी, लड़की आदि।
2. बबुआइन, शिक्षिका, पत्नी, मोरनी, गाय, वीरांगना साध्वी, बहन, पुत्रवती, दयावती, पुजारिन, स्वामिनी, नौकरानी, बनियाइन

3. नेत्र, बुद्धिमान, बछड़ा, हंस, देवर, रचयिता, ऊंट सुनार, रूपवान, थात
4. (क)गायिकाओं ने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।
(ख)भारत में नेताइनो का स्तर गिरता जा रहा है।
(ग)प्रधानाचार्या जी ने छात्राओं को पुरस्कार दिया।
(घ)लड़की ने एक वृद्धा को सड़क पार कराया।
(ड़)हमारी शिक्षिका बड़ी प्रतिभाशाली है।
5. विद्यावती, अभिमन्यि, गायिका
6. वीर, निर्मल, रुद्र, दाता 7. Do it yourself

Ch-6 (वचन)

(क) वचन दो प्रकार के होते हैं;
एकवचन बहुवचन
(ख) संस्कृत भाषा में वचनों को दो भागों में विभक्त किया गया है।
एकवचन बहुवचन
1. (क) संज्ञा शब्दों के जिस रूप से उसके एक या अनेक का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।
(ख) शब्द के जिस रूप से किसी एक व्यक्ति निर्धारित वस्तु आदि का बोध होता है, उसे एक वचन कहते हैं। जैसे; चूहा दौड़ता है।
2. सीतियाँ, धेनुएँ, तितलियाँ, गुरुजन, नेतागण, महिलाएँ
3. वर्ष, अदालत, भलनाई, चिड़िया, कहानी, चुहिया
4. चिड़ियाँ, कवयित्रीयाँ, पीते, कन्याएँ, छात्र, अध्यापक, दवाएँ, पाठिकाएँ
5. Do it yourself. 6. Do it yourself.

Ch-7 (सर्वनाम)

(क) संज्ञा के बदले बोले जाने वाले या संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले सभी शब्द समय सर्वनाम कहलाते हैं।
(ख) सर्वनाम के 6 प्रकार होते हैं
पुरुषवाचक सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम
अनिश्चयवाचक सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम
प्रश्नवाचक सर्वनाम निजवाचक सर्वनाम
(ग) ऐसे सर्वनाम शब्द जो किसी व्यक्ति वस्तु प्राणी आदि के बारे में प्रश्न का बोध करवाते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।
1. (क) संज्ञा के बदले बोले जाने वाले या संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले सभी शब्द समूह सर्वनाम कहलाते हैं।
(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम
अनिश्चयवाचक सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम

प्रश्नवाचक सर्वनाम　　निजवाचक सर्वनाम

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं।

उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम　　मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

2. (क) जो, वह -पुरुषवाचक सर्वनाम, जैसा, वैसा सम्बंधवाचक सर्वनाम
(ख) कोई -प्रश्नवाचक सर्वनाम　　(ग) अपने आप -निजवाचक सर्वनाम
(घ) किसने -प्रश्नवाचक सर्वनाम　　(ङ) मेरी -पुरुषवाचक सर्वनाम
(च) कुछ -अनिश्चयवाचक सर्वनाम　　(छ) जिसने, वही -पुरुषवाचक सर्वनाम

3. मध्यम पुरुष वाचक　　सम्बंधवाचक सर्वनाम
अनिश्चयवाचक सर्वनाम　　पुरुषवाचक सर्वनाम
निश्चयवाचक सर्वनाम　　निजवाचक सर्वनाम
प्रश्नवाचक सर्वनाम

4. (क)निश्चयवाचक सर्वनाम　　(ख)अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(ग)प्रश्नवाचक सर्वनाम　　(घ)निजवाचक सर्वनाम

5. Do it yourself　　6. Do it yourself

Ch-8 (विशेषण)

(क) बहुत शब्द यह पर विशेषण हैं, क्योंकि यह राम की विशेषता को दर्शाता है कि वह बहुत तेज दौड़ता है।

(ख) विशेषण की तीन अवस्थाएं होती हैं;

मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था

1. (क) (ग) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उसे विशेष होते हैं। जैसे; राम आज्ञाकारी बालक है।

(ख) विशेषण के चार प्रकार होते हैं;

गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, सार्वनामिक

ऐसे विशेषण शब्द जो संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुणों जैसे रूप, रंग, आकार, अवस्था, गुण, दोष आदि को बताते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

(ग) रूप, रंग, आकार, प्रकार, अवस्था, दशा, देश, काल, स्वाद, गंध, गुण, दोष आदि के शब्दों से विशेषण शब्द बनाए जाते हैं।

2. (क) (ख)लाल, गुणवाचक　　(ग) काले, गुणवाचक
(घ) तेज, परिमाणवाचक　　(ङ)कोई, अनिश्चित संख्यावाचक
(च) कुछ, अनिश्चित संख्यावाचक　　(छ) दो दर्जन, निश्चित संख्यावाचक
(ज) चटोरी, गुणवाचक

3. काली, ज्ञानी, मिठास्पर्शी, विषैला, सुरीला, पापी, कमाईशील, पढ़ाईशील, स्वादिष्ट, श्रमिक, भूलकारी, भौगोलिक, राजनीतिक, खर्चीला, शहरी, नगरीय, भारतीय, कागजी, तीसरा, पत्थरी, नमकीन
4. नीतिकुशल, सम्मानित, गर्वीला, बुद्धिमान
5. तेज समझदार बलवान मूर्ख स्वादिष्ट तेज
6. Do it yourself 7. Do it yourself

Ch-9 (विशेषण)

(क) बाजार से कुछ फल ले आना।

(ख) 'उड़ गया" संयुक्त क्रिया है।

1. (क) (क) ऐसे शब्द जिनसे पता चलता है कि कोई कार्य हो रहा है या किया जा रहा है, तो उसे क्रिया कहते हैं।
   जैसे: चलना, पढ़ना उड़ना आदि।
   (ख) जिस क्रिया में कर्म की आवश्यकता होती है और क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। तथा वाक्य में जिस क्रिया का फल केवल करता पर पड़ता है एवं जहां कोई कर्म नहीं होता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।
   (ग) रचना के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित भेद होते हैं; सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया, नामधातु क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया
   (घ) वाक्य में प्रयुक्त ऐसे क्रिया जिसे करता स्वयं न करके किसी अन्य को कोई कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।
   जैसे: रंजना नौकरानी से खाना बनाती है।
   (ङ) अर्थ का रंजन करने वाली क्रियाएं रंजक क्रिया कहलाती है।
2. (क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया
   (ग) सकर्मक क्रिया (घ) सकर्मक क्रिया
   (ङ) एककर्मक क्रिया (च) अकर्मक क्रिया
   (छ) द्विकर्मक क्रिया (ज) द्विकर्मक क्रिया
3. बुलवाती पिसवाती सुनवाती डुबाती
   लिखवाती चलवाती उठाती पढ़वाती
   चलवाती ठेलवाती जमवाती डरवाती
4. तलियाना बतियाना सठियाना गरमाना
   दोहराना चिकनाहट बड बड़ाना भिन्न भिनाना
   अपनाना जूतियाना लज्जवाना शर्माना
   हथियाना झुठलाना थर थराना हिच हिचाना

	टिमटिमाना	हिनहिनाना	सोटना	फटकारना
5.	करता	अकर्मक क्रिया	फिलमाया
	प्रेरणार्थक क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया	

6. भैया को बुला कर लाओ कुएं में से रस्सी खिंचवाना है।
आज छोटी बहन को यह पाठ पढ़वाना है।
जरा सी डांट पड़ते ही उसने अपने जूते चमकाना शुरू कर दिए हैं।
सही समय पर छोटे बच्चों को चलवाना शुरु कर देना चाहिए।
बच्चों को सही समय पर सुलाना चाहिए।
छोटे बच्चे को खिलाना अच्छा लगता है।
आज मुझे इंडिया को जितवाना है।

7. Do it yourself. 8. Do it yourself. 9. Do it yourself.

Ch-10 (काल)

(क) भूतकाल के 6 भेद होते हैं।

सामान्य भूतकाल	आसन्न भूतकाल
पूर्ण भूतकाल	अपूर्ण भूतकाल
संदिग्ध भूतकाल	हेतुहेतुमद भूतकाल

(ख) भविष्यत काल

1. (क) क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चलता है उसे काल कहते हैं।
(ख) काल के तीन भेद होते हैं भूतकाल वर्तमान काल भविष्यत काल
भूतकाल के 6 भेद होते हैं।
सामान्य भूतकाल, आसन्न भूतकाल, पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल ,
संदिग्ध भूतकाल, हेतुहेतुमद भूतकाल
वर्तमान काल के तीन भेद होते हैं
सामान्य वर्तमानकाल, अपूर्ण वर्तमानकाल, संदिग्ध वर्तमानकाल
भविष्यत काल के दो भेद होते हैं
सामान्य भविष्यत काल, संभाव्य भविष्यत काल
(ग) ऐसी क्रिया शब्द जिनसे उनके भविष्य में होने की संभावना का पता चलता है, उसे संभाव्य भविष्यत काल कहते हैं।
उदहारण; शायद मेरा भाई जून में आए
(घ) इसमें क्रिया का वह रूप जिससे पता चलता है कि कार्य पूर्ण होना किसी अन्य पर निर्भर करता है वहां हेतुहेतुमद भूतकाल होता है।
उदाहरण; यदि वर्षा होती, तो ज़मीन गीली हो जाती।

2. (क) संभाव्य भविष्यत काल (ख) पूर्ण भूतकाल
(ग) सामान्य भविष्यत काल (घ) हेतुहेतुमद भूतकाल
(ङ) सामान्य वर्तमान काल

3. मेले में बाजे बिक रहे हैं। मालिन माला गूंथेगी।
गली में कुत्ते भौंक रहे हैं। मतदान हो रहा है।
नौकरानी झाड़ू लगा चुकी है।

4. (क) कवियत्री (ख) लगी (ग) थे (घ) लगा

5. संदिग्ध भूतकाल हेतुहेतुमद भूतकाल
संदिग्ध वर्तमान काल अपूर्ण वर्तमान काल
संभाव्य भविष्यत काल

7. Do it yourself 8. Do it yourself

Ch-11 (संधि)

(क) दो वर्णों के योग से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।

(ख) स्वर संधि सती+ईश= सतीश
व्यंजन संधि सत्+धर्म= सदधर्म
विसर्ग संधि निः+रोग= निरोग

1. (क) दो वर्णों के मेल से उनके रूप में जो बदलाव या परिवर्तन आता है, वह संधि कहलाता है।
(ख) किसी भी व्यंजन के बाद कोई स्वर या व्यंजन आने पर जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि करता है।
(ग) विसर्ग का मेल यदि किसी स्वर या व्यंजन से होता है, तो विसर्ग के स्थान पर होने वाले बदलाव को विसर्ग संधि कहते हैं।

2. सु+उक्ति नै+अक गज+आनन महा+इन्द्र
निः+चल प्रति+उत्तर शीत+ऋतु वर+अवर
सु+अच्छ नर+इन्द्र निः+पाप अति+अधिक
भोजन+आलय यथा+इष्ट पौ+अक सद+एव

3. उज्जवल दुगम सप्त ऋषि देवीलंकार
राजर्षि शयन सेवार्थ भावुक
जगन्नाथ शरदचंद महौजस्वी लघूर्मि
नायिका शिक्षालय सतीश अधः पतन
सकेश मात्राज्ञा महौदार्य अभीष्ट
भावार्थ

4. गुरु+आदेश पौ+अक सदा+एव मत+एवय

एक+एक	जय+इंद्र	यथा+उचित	वधू+उन्नति
नौ+इक	प्रति+उत्तर	सम+शोधन	भगवत+गीता
सम्+जीवन	सम्+सार		

5. Do it yourself
6. Do it yourself

Ch-12 (समास)

(क) सामासिक पदों का विग्रह करने के बाद पूर्व के अनेक शब्दों में नहीं आने की क्रिया को समास विग्रह कहते हैं।

(ख) समास के 6 भेद होते हैं;

अव्ययीभाव समास	तत्पुरुष समास	कर्मधारय समास
द्विगु समास	द्वंद्व समास	बहुव्रीहि समास

(ग) जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है और दोनों पदों के बीच से कारकों के परसर्ग हट जाते हैं, उनको तत्पुरुष समास कहा जाता है।

1. (क) अनेक शब्दों को संक्षिप्त करके शब्द बनाने की प्रक्रिया को समाज कहते हैं।

   उदाहरण: प्रतिदिन- दिन दिन में

   (ख) जिस समास के दोनों पदों में विशेषण और विशेष्य या उपमान में का संबंध होता है, साथ ही उत्तर पद प्रधान होता है , वहां कर्मधारय समास होता है। तथा ऐसा सामासिक पद जिसमे कोई भी पद प्रधान ना होकर कोई तीसरा या अन्य पद प्रधान होता है, वहां बहुव्रीहि समास होता है।

   (ग) जिस समाज का पहला पद संख्यावाची विशेषण होता है। समस्त पद समाहार यानी समूह का बोध कराता है उसे द्विगु समास कहते हैं।

2. तीन नेत्रों वाला- शिव, बहुव्रीहि समास
   काली है जो मिर्च , कर्मधारय समास
   शक्ति से संपन्न, तत्पुरुष समास
   सात ऋषियों का समूह, द्विगु समास
   पांच आबों का समूह, द्विगु समास
   दिन ही दिन में, अव्ययीभाव समास
   माता और पिता, द्वंद्व समास
   कमल के समान नयन, कर्मधारय समास

3. रसोईघर, तत्पुरुष समास — चतुर्भुज, द्विगु समास
   नवनिधि, द्विगु समास — यथाशीघ्र, अव्ययीभाव समास
   मासनचोर, बहुव्रीहि समास — सेनानायक, तत्पुरुष समास
   श्यामसुंदर, कर्मधारय समास — पुरुषसिंह, कर्मधारय समास

4. कर्मधारय समास — द्विगु समास
तत्पुरुष समास — तत्पुरुष समास

Ch-13 (कारक)

(क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे क्या कहते हैं।

(ख) कारक के 8 भेद होते हैं।

कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक

1. (क) वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में क्रिया के साथ-साथ अन्य पदों से किया जाए, उसे कारक कहते हैं।

(ख) क्रिया के संपन्नता जिस साधन से होती है उसे करण कारक कहते हैं तथा अपादान कारक में अलग होने का अभाव होता है।

(ग) जिस किसी को उदारता या शुद्ध मन से कुछ दिया जाए उसे संप्रदान कारक कहते हैं, उसका चिन्ह "को, के लिए" है।

जैसे; माताजी ने नौकरानी को साड़ी दी।

(घ) यह वे अक्षर हैं जो किसी शब्द के बाद आते हैं, और कोई विशेषता लाते हैं।

2. सविता ने बाजार से साड़ी खरीदी।
यहां पुस्तक पापा दुकान से ले आए हैं।
दशरथ ने तीर श्रवण कुमार को मारा।
कबूतर डाल पर बैठे हैं।
नीतांजना की पोशाक बहुत सुंदर है।

3. कर्ता कारक, ने — कर्म कारक, को
करण कारक, से/द्वारा — संप्रदान कारक, को/के लिए
अपादान कारक, से (अलग) — संबंध कारक, का/की/रा
संबोधन कारक, हे/हो/अरे

4. Do it yourself — 5. Do it yourself

Ch-14 (उपसर्ग)

(क) ऐसी शब्दांश जो मूल शब्दों से पहले जोड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग होते हैं।

(ख) उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं।

संस्कृत के उपसर्ग — हिंदी के उपसर्ग
उर्दू/फारसी/अंग्रेजी के उपसर्ग

1. (क) ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द के पहले जोड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं और उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वह उपसर्ग कहलाते हैं।

(ख) उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं।

संस्कृत के उपसर्ग हिंदी के उपसर्ग

उर्दू/ फारसी/अंग्रेजी के उपसर्ग

(ग) ऐसे उपसर्ग जिनसे संस्कृत के शब्दों का निर्माण होता है वह संस्कृत के उपसर्ग कहलाते हैं।

2. सहपाठी, सहयोग अहिंसा, अज्ञान पुराजीव, पुरातत्व
गैरजिम्मेदार, गैरआबाद भरपेट, भरपूर स्वराज्य, स्वदेश
अध: पतन, अधोगति चौराहा, चौमासा प्रतिघात, प्रतिक्रिया
विरकुमार, विरकाल हमसफर, हमलोग कपूत, कुजात
प्रहार, प्रवार बहिष्कार, बहिर्मुखी अधमरा, अधखुला
सुक्रम, सुपुत्र परिक्रमण, परिमाण नियम, निवास
बाअदब, बकायदा बदनाम, बदसूरत

3. चौ + राहा दर+ असल नि+ वास
स+ परिवार अति+इव परा+ अस्त
प्रति+ क्रिया बिन+ बुलाया गैर+ इरादतन
सम+ कोण ला+ परवाह बा+ अदब
अन्+ बन प्र+ हार सम्+ पत्ती
सु+ कर्म खुश+ मिजाज दर+ मियान
कम+ उम्र पुन+अर्वास सत्+ जन
आविर्+ भाव स्वयं+ सेवक स्व+ देश
हम+सफर सम+ कालीन भर+ पेट

4. परि= परिमाण कु= पात्र बे= मन
बिन = बिनब्याही प्रति= प्रतिकूल महा= महापुरुष
बे= ईमान अप= व्यय ना= बालिग
वि=विदेश पर= परवाह नि=निर्माण
परि= भाग प्रति= प्रतिहार परि= परिपूर्ण
बहु= बहुमुखी महा= महात्मा उप = उपकार
हर=हरतरफ बद= बदसूरत नि= निहत्था

5. सम्+ वाद प्रति+ कूल अति+ अचार खुश+ खबरी

6. दुरशासन, सज्जन, निसंकोच, निर्वस्त्र

7. Do it yourself 8. Do it yourself

Ch-15 (प्रत्यय)

(क) मूल शब्द के बाद लगकर जो शब्दांश नया शब्द बनाते हैं और मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

(ख) सत्य के दो भेद होते हैं।
कृत प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय

1. (क)जो शब्दांश मूल शब्द या धातु के अंत में जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं और मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।
जैसे ; खेल + औना= खिलौना

(ख) प्रत्यय के दो भेद होते हैं; कृत प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय
जो प्रत्यय क्रिया धातुओं के अंत में जोड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं। जैसे; झूल+ आ= झूला

(ग) जो प्रत्यय क्रिया धातुओं के अंत में जोड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं। जैसे; झूल+ आ= झूला

(घ) क्रिया से अलग संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों के अंत में लगकर तद्धित प्रत्यय बनाए जाते हैं।

2. घुमक्कड़, भुलक्कड़, पियक्कड़ — चालक, धावक, गायक
पालनहार, खेवनहार, रखनहार — झूला, ठेला, मेला
गाना, खाना, पाना — छलावा, दिखावा, बुलावा

3. ओढ़+ नी — घट+ इया — गा+ एया — सुंदर+ ता
बच+ पन — अच्छा+ आई — ससुर+ आल — मथ+ आनी
लूट+ एरा — टिक+आऊ — छल+आवा — चढ़+ आई
बिछ+औना — मोट+ आपा

4. गुरुत्वपूर्ण, विलासितापूर्ण, सुलभता, निर्दयता, अनुदान, बचपना, बेचैनी, परिपूर्णता, निलंबित

5. नागर+ इक+ ता — रंग+ ईन
विभाग+ईय — सत्+जन+ ता

6. बसेरा — शास्त्री — मोटापा — खिलौना — सपेरा

7. Do it yourself — 8. Do it yourself

Ch-16 (शब्द-भंडार)

(क) ऐसे शब्द जिन से एक से अधिक अर्थ निकलते हैं, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहते हैं।

(ख)अनेक प्रकार के शब्दों का भंडार शब्द भंडार कहलाता है।

(ग) अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करना वाक्यांश बोधक शब्द कहलाता है।

1. (क)ऐसे शब्द जैसे एक से अधिक अर्थ निकलते हैं उन्हें अनेक आर्थिक शब्द कहते हैं।

(ख)ऐसे शब्द जो वर्तनी और उच्चारण में सूक्ष्म अंतर के कारण लगभग समान उपचारित किए जाते हैं, वह श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

उदाहरण;

अंक -गोद अंग -शरीर के भाग

(ग)अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करना वाक्यांश बोधक शब्द कहलाता है। जैसे;

जिस पर विश्वास किया जा सके -विश्वसनीय

(घ)जो शब्द संस्कृत भाषा से हैं वह ज्यों के त्यों हिंदी में भी प्रयोग किए जाते हैं ,तत्सम शब्द कहलाते हैं। वही इन तत्सम शब्दों का अपभ्रंश स्वरूप तद्भव शब्द कहलाता है।

2. बिना जड़ का कीमती
भलाई बुराई
बुढ़ापा थोड़ा सा
सांप का फन हुनर
बराबर वस्तु
शरीर मुख
लाख की संख्या उद्देश्य
शुरु अभ्यस्त

3. सर्वज्ञ, पारिश्रमिक, अनुपम, अगम्य, विश्वसनीय, विज्ञानी, अल्पव्ययी, सर्वज्ञ,

4. रंक, योग्य, दीर्घायु, अपकार, सज्जन, पतन, कृतघ्न, अघोषित

5. निर्माता, भागीरथी सरिता, तटिनी पेड़, पादप
पाहुना, मेहमान कुरंग, मृग पहाड़, गिरि
सरोज, पंकज नभ, आसमान भू, धरा
दिनकर, सूरज

6. अग्नि पाषाण उल्लूक द्योटक
जल पर्यंक उष्ट्र ओष्ट

7. श्रेष्ठ, अध्यापक समय, मृत्यु
पूरब दिशा , पिछला अंगूठी, धन
समाधान, खेत जोतने वाला यंत्र सोना, धतूरा

एक दिशा का नाम, जवाब — धन, अभिप्राय
भाग, शरीर का अंग — पराजय, पुष्पमाला

8 Do it yourself 9. Do it yourself

10. Do it yourself

Ch-17 (मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ)

(क) ऐसे वाक्यांश जो अपने सामान्य अर्थ के स्थान पर अपना विशेष अर्थ प्रकट करते हैं उन्हें मुहावरा कहते हैं।

(ख) हमारे वर्षों के अनुभव के सार को लोकोक्तियां कहावत कहते हैं।

1. (क) वे वाक्यांश या शब्द समूह होते हैं जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर लाक्षणिक अर्थ ग्रहण करते हैं, उन्हें हम मुहावरा कहते हैं।

(ख)हमारे वर्षों के अनुभव के सार को कहावत कहते हैं। जैसे; एक पंथ दो काजा

(ग)मुहावरे का प्रयोग वाक्य के बीच में होता है। लोकोक्ति वाक्य के अंत में लिखी जाती हैं।

2. नाम बड़ा किंतु काम खराब — शर्मिंदा होना
मुसीबत भरा जोखिम उठाना — बात फैलाना
जी तोड़ कोशिश — पुरानी बातें याद दिलाना
गरीब किंतु गुणी व्यक्ति

3. जानबूझ कर खतरे में पड़ना
अपनी कमजोरी पर खींचकर दूसरों पर गुस्सा निकालना
पैसे से कार्य करवाना
कोरी कल्पनाएं करना

4. Do it yourself 5. Do it yourself

Ch-18 (वाच्य)

(क) वाच्य के तीन भेद होते हैं।
कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य

(ख) नृत्य कर रही है।

1. (क) क्रिया के जिस रूप से पता चलता है कि क्रिया कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार हो रही है या हुई है, उसे वाच्य कहते हैं।

(ख) ऐसे वाक्य जिनकी क्रियाएं कर्म के अनुसार होती हैं अथवा क्रियाओं का फल कर्ता पर न पड़कर केवल कर्म का पड़ता है, उन्हें कर्मवाच्य कहते हैं।

जैसे; दर्जी से कपड़े सिले जाते हैं।

(ग) जिस वाक्य की क्रिया करता या कर्म के अनुसार न होकर उसके भाव के अनुसार होती है, तो भाववाचक कहते हैं।

(घ) ऐसे वाक्य जिसकी क्रिया कर्ता के अनुसार होती है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

2. कर्तृवाच्य भाववाच्य कर्मवाच्य भाववाच्य कर्तृवाच्य

3. रेजना खाना खा रही है। बच्चा सो रहा है।
नंदन द्वारा पाठशाला जाया जाता है। विश्वनाथ द्वारा पत्र लिखा जाता है।
मानसी से हंसा जाता है। मयुप से नहाया जाता है।

4. कर्मवाच्य कर्मवाच्य भाववाच्य

5. Do it yourself 6. Do it yourself

Ch-19 (वाच्य)

(क) पद वह होता है, जो व्याकरणिक नियमों से बंद करो वाक्य में यथा स्थान प्रयुक्त किया जाता है।

(ख) उपर्युक्त पदों का व्याकरण परिचय देना ही पद परिचय कहलाता है।

1. (क) वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द का व्याकरण के अनुसार जानकारी या परिचय देना ही व्याकरणिक परिचय या पद परिचय कहलाता है।

(ख)संज्ञा का पद परिचय देते समय संज्ञा का भेद, लिंग, वचन, कारक, एवं क्रिया से संबंधित बातों का ध्यान देना चाहिए।

(ग) विशेषण शब्द का पद परिचय देते समय भेद, वचन, लिंग, अवस्था, विशेष्य, बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(घ) सर्वनाम के भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया के साथ संबंध दर्शाया जाता है।

2. पिता जी- पुल्लिंग, एकवचन, सम्बंध कारक
लखनऊ -व्यक्तिवाचक संज्ञा
खूबसूरत -विशेष्य गुणवाचक
कविता जी -स्त्रीलिंग, एकवचन, सम्बंध कारक
मुझे- एकवचन, पुल्लिंग, पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष
प्रतिदिन -बहुवचन, परिमाणवाचक

4. iii, ii, iii, iii

5. Do it yourself

Ch-20 (पदबंध तथा वाक्य-विचार)

(क) जब भी कोई पद समूह वाक्य में संज्ञा का काम करता है, वह संज्ञा पदबंध कहलाता है।

(ग) जिस वाक्य में उपवाक्य समान स्तर के होते हैं और, तथा, इसलिए और किंतु से जुड़े होते हैं, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं।

1. (क) पद- वाक्य से अलग रहने पर 'शब्द' और वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द 'पद' कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में- वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है। पदबंध- जब दो या अधिक (शब्द) पद नियत क्रम और निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते हैं तो उन्हें पदबंध कहते हैं।

(ख)भावों और विचारों को प्रकट करने वाले सार्थक व्यवस्थित शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।

(ग) वाक्य के 2 अंग होते हैं उद्देश्य तथा विधेय

(घ)ऐसे वाक्य जिनमें एक प्रधान वाक्य और दूसरा आश्रित उपवाक्य होता है, उसे मिश्र या मिश्रित वाक्य कहते हैं।

2. विशेषण पदबंध — विशेषण पदबंध
   क्रिया विशेषण पदबंध — क्रिया पदबंध
   विशेषण पदबंध — विशेषण पदबंध
   विशेषण पदबंध

3. विधानवाचक वाक्य — निषेधवाचक वाक्य
   आज्ञा वाचक वाक्य — संयुक्त वाक्य
   विस्मयवाचक वाक्य — संकेतवाचक वाक्य
   आज्ञावाचक वाक्य

4. | उद्देश | विधेय |
   |---|---|
   | सुशील | होनहार |
   | किसान | आंदोलन कर रहे हैं। |
   | अलका | ने सुंदर भजन सुनाया। |
   | सरिता | ने भोजन किया और पढ़ने लगी। |
   | कल्कि | पढ़ती है। |
   | पिताजी | मुंबई जाएंगे। |
   | नरेंद्र | घर आया |
   | मिसेज शर्मा | अलख बनाते हैं। |
   | नालंदा विश्वविद्यालय | बिहार में था। |
   | नाव | चली गई। |

5. iii, i, iii, i, iii

6. Do it yourself

7. Do it yourself

Ch-21 (विराम-चिह्न)

(क)भाषा के लिखित रूप में स्थान विशेष पर रोकने के लिए संकेत करने वाले चिह्नो को विराम चिह्न कहते हैं।

(ख)विराम चिन्ह 12 प्रकार के होते हैं।

(ग)यह चिह्न प्रश्नवाचक चिह्न वाले वाक्य के अलावा सभी वाक्य के अंत में लगाया जाता है।

1. (क)भाषा के लिखित रूप में स्थान विशेष पर रोकने के लिए संकेत करने वाले चिह्नो को विराम चिह्न कहते हैं।
   (ख) इस चिह्न का प्रयोग वाक्य में उचित स्थान पर छूटे अंश को जोड़ने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
   (ग) इस चिह्नो का प्रयोग किसी पात्र की बात को उसी के शब्दों में रखने के लिए नाटकों में किया जाता है तथा योजक चिह्नो का प्रयोग सामासिक पदों के बीच तुलनावाची शब्दों सा, सी, से आदि के साथ लगाया जाता है।

2. अर्ध विराम — पूर्णविराम चिह्न
   विन्यासूचक चिह्न — उद्धरण चिह्न
   त्रुटिपूरक चिह्न — लाघव चिह्न
   कोष्टक चिह्न — प्रश्नवाचक चिह्न

3. नंदन, मनोहर, रंजना, कविता और सुरेश ने नाटक में भाग लिया।
   वाह! क्या बात है, मुझे तुम्हारी जीत पर भरोसा था।
   तुलसीदास को 'गोस्वामी' भी कहा जाता है। वे राम के भक्त थे।
   अध्यापिका ने कहा, "चलो आज कुछ बोलते हैं।"

4. के० मा० शि० बो० — स० शै० अनु० प्र० परि०
   कृ० प० उ० — मा० प० अनु० के०
   का० हि० वि०

5. मैंने जब रश्मि को देखा, तो अवाक रह गया। उसके व्यक्तित्व में अत्यधिक बदलाव आ गया था। वह एक चंचल लड़की अब काफी गंभीर लगने लगी थी। उसका अल्हड़पना अब गायब होकर एक जिम्मेदारी का भाव चेहरे पर दिखाने लगा था। वह आई और एक सहज मुस्कान बिखेर कर कहा : "ताऊ जी मैं आई०ए०एस० बन गई"। मैं तो खुशी के मारे बल्लियों उछल पड़ा।

6. Do it yourself 7. Do it yourself 8. Do it yourself

Ch-22 (अलंकार)

(क)ऐसे अलंकार जहां शब्दों में चमत्कार उत्पन्न होता है वह शब्दालंकार कहलाते हैं।

(ख)अलंकार शब्द का अर्थ है 'आभूषण। जिस प्रकार से कोई भी व्यक्ति सुंदर लगता है, उसी प्रकार अलंकारों के प्रयोग से काव्य या उसकी भाषा सुंदर हो जाती है।

(ग) अलंकार के दो भेद होते हैं

शब्दालंकार, अर्थालंकार

1. (क)जो शब्द आपके वाक्यांश को अलंकृत करें वहां अलंकार कहलाते हैं।

(ख)ऐसे अलंकार जहां शब्दों में चमत्कार उत्पन्न होता है, वे शब्दालंकार कहलाते हैं।

ऐसे अलंकार जिसमें जड़ पदार्थ मनुष्यों की तरह बोलते हैं तथा व्यवहार करते दिखलाई पड़ते हैं, वहां मानवीकरण अलंकार होता है।

(ग)जिस अलंकार में किसी की बातों को बढ़ा चढ़ा कर बताया जाता है, वहां अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

2. श्लेष अलंकार — अनुप्रास अलंकार
श्लेष अलंकार — मानवीकरण अलंकार
रूपक अलंकार

3. अनुप्रास — श्लेष — अनुप्रास — उत्प्रेक्षा

4. Do it yourself

5. Do it yourself

Ch-23 (सार-लेखन)

1. किसी गद्य खंड के मुख्य भागों को या मूल बातों को बिना जुड़े ही संक्षेप में लगभग एक तिहाई भाग में लिखना सार लेखन कहलाता है।
2. भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हजारों नारियों ने सुभाष चंद्र बोस के साथ सहयोग किया। महिलाओं ने अनेक यातनाएं सही और तुलादान देकर देश की आजादी की अलख जगाई रखी। आज महिलाएं हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं। महिलाएं अपने ज्ञान और कर्म से हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रही हैं।
3. भाषा के स्तर के गिरने से राजनीति और समाज दोनों प्रभावित हो रहे हैं और इस समस्या का समाधान ढूँढना बहुत आवश्यक है। इसके लिए शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से लोगों को जागरूक करना जरूरी है। साथ ही नेताओं को भाषा पर नियंत्रण रखने के लिए कानूनों का पालन करना चाहिए और मीडिया के लिए भी नियमों का पालन करना जरूरी है।
4. अनुशासन एक जीवनशैली है जो हमें सफलता की ओर ले जाती है। यह हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन दोनों के लिए आवश्यक है। आत्मिक

अनुशासन आत्मविश्वास बढ़ाता है जबकि बाह्य अनुशासन हमें संयमित रखाने में मदद करता है। अनुशासन एक स्वयं नियंत्रित जीवन जीने का मार्ग होता है जो हमें अपने लक्ष्यों की दिशा में अग्रसर रखता है।

5. विज्ञापन का बाजार बढ़ता जा रहा है और हर उत्पाद या सेवा के लिए विज्ञापन मिल जाते हैं। इसलिए, हमें विज्ञापन के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों पर ध्यान देना चाहिए। सकारात्मक विज्ञापन से हमें फायदेमंद जानकारी मिलती है, जबकि नकारात्मक विज्ञापन हमें बिना जरूरत के खरीदारी के लिए मना करते हैं। हमें उनके आधार पर उत्पादों या सेवाओं का चयन करना चाहिए जो हमें फायदेमंद होंगे।

Ch-24 (निबंध-लेखन)

1. निबंध के द्वारा लेखक आत्मीयता, वैयक्तिकता के साथ विषय या प्रसंगों पर स्वयं की भाषा शैली में अपने भाव या विचार प्रकट करता है।
2. निबंध लिखते समय हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए
   निम्बंध का आरंभ अथवा अंत आकर्षक होना चाहिए।
   रोचक, प्रभावशाली तथा सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
   विषय तथा शब्द सीमा को ध्यान में रखकर निबंध लिखना चाहिए।
   विराम चिह्नों का उचित उपयोग करना चाहिए।
   निबंध को प्रभावशाली तथा रोचक बनाने के लिए दोहों मुहावरों लोकोक्तियों तथा सूक्तियों आदि का प्रयोग करना चाहिए।
3. निबंध दो प्रकार के होते हैं
   व्यक्ति प्रधान निबंध विषय प्रधान निबंध
   (क)
   राजीव गांधी
   प्रस्तावना जीवन परिचय, राजनीति में योगदान उपसंहार।
   राजीव गांधी, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी का एकमात्र बेटा था। वह भारतीय राजनीति के महत्वपूर्ण नेताओं में से एक थे। राजीव गांधी का जन्म 20 अगस्त, 1944 को मुंबई में हुआ था। उन्होंने दिल्ली के स्टीफन कॉलेज से अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त की।
   राजीव गांधी को भारतीय राजनीति में अपना स्थान बनाने में कुछ समय लगा, लेकिन उनका समर्थन सन् 1984 में जनता दल से जुड़ने के बाद तेजी से बढ़ा। उन्होंने विवेकानंद के विचारों पर आधारित एक समाजवादी आधार बनाया था। उन्होंने भारत की राजनीतिक मानसिकता को बदलने के लिए कई अहम कदम उठाए थे।

राजीव गांधी ने 1984 में अपने पिता के मृत्यु के बाद कांग्रेस पार्टी में शामिल होते हुए विवेकानंद के सोच के आधार पर एक समाजवादी नीति का विकास किया। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में काम किया, जिनमें वित्तीय विकास, किसानों की उन्नति, निर्माण और सड़क निर्माण शामिल थे। उन्होने सेन्ट्रल विस्तारण के निर्माण के लिए भी प्रयास किए थे। उनका समर्थन स्कूल शिक्षा, वैज्ञानिक शोध और संगठित श्रमिकों के अधिकारों को बढ़ाने में भी था।

1984 में, प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद, उन्हें पार्टी के अध्यक्ष बनाया गया था। 1991 में, उन्हें भारत के प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था। वह अपनी कुशलता के कारण अच्छी तरह से जाने जाते हैं। उनके प्रधानमंत्री पद काल में भारत अपने आर्थिक विकास और स्वतंत्रता की नींव रखने में सफल रहा था।

राजीव गांधी की मृत्यु 21 मई, 1991 को हुई थी। वह एक अद्भुत नेता, कुशल वक्ता और समाजसेवी थे। उन्होंने अपने जीवन के दौरान भारत के विकास के लिए अपना सबसे अधिक समय दिया था। वे एक महान व्यक्तित्व थे जिन्होंने भारत को एक बेहतर भविष्य की तरफ आगे बढ़ाया।

Ch-25 (पत्र लेखन)

1. पत्र व्यक्तिगत संबंधों में ही नहीं बल्कि व्यापार और व्यवसाय में भी सहायक सिद्ध होते हैं पत्रों के द्वारा ही हम देश विदेश में बसने वाले संबंधों तथा मित्रों से विचारों का आदान प्रदान करते हैं।
2. पत्र लिखते समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:

   पत्र में लिखने वाले का पूरा पता और दिनांक उपयुक्त स्थान पर ही लिखा होना चाहिए।

   पत्र का संबंध सही संबोधन और अभिवादन से होना चाहिए।

   पत्र की भाषा सहज स्पष्ट एवं सरल होनी चाहिए।

1. नाम/ पता/ दिनांक

   प्रिय [दोस्त का नाम],

   मैं आपको बताने के लिए बेहद उत्सुक हूं कि हमारी कक्षा में एक नया अध्यापक हमें पढ़ाने आया है। उनका नाम है [अध्यापक का नाम] और मैं आपको बताना चाहूंगा कि वे बहुत ही शानदार हैं।

   उनमें बहुत सारी विशेषताएं हैं, जो हमारे लिए एक अच्छे अध्यापक की पहचान बनाती हैं।

   वे बहुत समझदार हैं और हमारे विषय में बहुत ज्ञानी हैं। उनके पास दृष्टिकोण और समझाने का तरीका बहुत अलग है। उनके पास एक सफल शिक्षक होने

के लिए बहुत सारी रचनात्मक और जानकार तकनीक हैं। उन्होंने हमारी कक्षा में नए और रोचक तरीकों से पढ़ाया है जो हमें बहुत प्रेरित करते हैं।
अगली बार मिलने पर, उनसे मिलकर मेरी तरफ से उन्हें नमस्कार कहिएगा।
धन्यवाद,
[आपका नाम]

2. प्रिय पिताजी,
मैं आपको अपने नए विद्यालय के प्रथम दिन के अनुभव के बारे में बताना चाहता हूँ।
मैंने अपनी नई कक्षा में बैठने से पहले थोड़ा घबराया था, लेकिन जब मैं अपने विद्यालय के प्रशासन और अध्यापकों से मिला तो मैं बहुत खुश हुआ। वे सभी बहुत अच्छे लोग थे और मुझे बहुत अपना महसूस कराया।
मेरी कक्षा बहुत सुंदर है और हमारी अध्यापक दीदी बहुत अच्छी हैं। वे बहुत उत्साहित हैं और हमें सभी विषयों में सक्रिय रहने के लिए प्रेरित करती हैं।
मैंने भी विद्यालय में कुछ नए दोस्त बनाए हैं। हम सभी एक दूसरे से मिलकर खुश हुए और हमारी मित्रता अब से शुरू हुई है।
मेरा विद्यालय बहुत अच्छा है और मैं यहाँ सफलता प्राप्त करने के लिए तैयार हूँ। मुझे पता है कि आप भी मेरे सफल होने में मेरे साथ होंगे।
आपको जल्द ही मिलने की उम्मीद के साथ,
आपका प्यारा बेटा/बेटी

3. प्रिय माताजी,
मैं आपको अपने छात्रावास के वातावरण के बारे में बताना चाहती हूँ।
मेरे छात्रावास में रहना बहुत अच्छा अनुभव हो रहा है। यहाँ का वातावरण बहुत ही सुखद है और यहाँ के लोग बहुत मददगार हैं।
मुझे अपनी कमरे और दूसरी सुविधाओं के साथ-साथ खाने का भी विकल्प मिलता है। खाने में भी सभी विद्यार्थियों के लिए स्वस्थ और स्वादिष्ट भोजन प्रदान किया जाता है।
यहाँ के छात्रों के साथ समय बिताना भी बहुत मजेदार होता है। हम सभी एक दूसरे से अच्छी तरह संबंध बनाते हैं और एक दूसरे के साथ अनेक गतिविधियों में भाग लेते हैं।
मैं यहाँ अपनी पढ़ाई में भी बहुत सक्रिय हूँ और यह सुनिश्चित है कि मेरी शिक्षा के साथ-साथ मैं यहाँ सामाजिक रूप से भी बहुत कुछ सीखूंगी।
आपका सदा आभारी,
आपकी प्यारी बेटी

4. सेवा में
थाना इंचार्ज,
महोदय,
मैं आपको इस पत्र के माध्यम से अपने क्षेत्र में बढ़ते अपराधों की रोकथाम के बारे में चिंतित होकर लिख रहा हूं। हाल के दिनों में, हमारे क्षेत्र में बढ़ते हुए चोरी, डकैती, लूटपाट, व अन्य अपराधों की गतिविधियों की रिपोर्ट आ रही है। ये अपराध न केवल हमारी सुरक्षा को खतरे में डालते हैं, बल्कि इससे नगर का नाम भी खराब होता है।
मुझे पता है कि आप और आपकी टीम हमारी सुरक्षा को लेकर काफी संवेदनशील हैं। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप अपनी टीम के साथ जल्द से जल्द उचित कदम उठाएं ताकि अपराधों को रोका जा सके और हमारा क्षेत्र सुरक्षित बना रहे।
धन्यवाद,
[आपका नाम]

Ch-26 (संवाद लेखन)

Do it yourself

Ch-27 (कहानी लेखन)

Do it yourself

(अभ्यास प्रश्न पत्र-1)

1. (क)भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मन के भावों और विचारों को दूसरे के सामने प्रकट कर सकते हैं और दूसरे के मन के भावों और विचारों को स्वयं समझ सकते हैं।
(ख)जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती है अर्थात वे स्वतंत्र वर्ण होते हैं, उन्हें स्वर् कहते हैं।
स्वर के तीन भेद होते हैं।
ह्रस्व स्वर दीर्घ स्वर प्लतु स्वर
(ग)दो वर्णों के योग से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।
स्वर संधि व्यंजन संधि विसर्ग संधि
(घ)उत्पति के आधार पर शब्द के चार भेद होते हैं तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी
(ड़)ऐसी शब्दांश जो मूल शब्दों से पहले जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग होते हैं तथा मूल शब्द के बाद लगकर जो शब्दांश नया शब्द बनाते हैं और मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

2. (क) हरियाली	राकेश	जयचंदों
(ख) लड़कपन	पढ़ाई	आलस्य
कड़वाहट	सर्वस्व	नेतृत्व
3. थाल	चौधरी	बुद्धिमती
पुत्रवती	बनियाइन	स्वामी
(ख) पाठकों	पक्षी	धेनुएँ
कहानी	लेखिकाएँ	नेताओं

4. ने   ने, को   की   पर

5. अनिश्चयवाचक	संबंधवाचक	उत्तम पुरुष
निश्चयवाचक	निजवाचक	प्रश्नवाचक
6. सम्मानित	ख ग	गर्वीला

7. सकर्मक क्रिया	सकर्मक क्रिया
अकर्मक क्रिया	अकर्मक क्रिया
8. मतदान पड़ चुका था।	मेले में गहने बिकते हैं।
मालिन माला गूथेंगी।	नौकरानी झाड़ू लगा चुकी थी।
9. कानजी, जापानी	गुरुमुखी
जस्तलीख, फ़ारसी	देवनागरी
रोमन	रोमन लिपि

(अभ्यास प्रश्न पत्र-2)

1. (क) क्रिया के जिस रूप से पता चलता है कि क्रिया कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार हो रही है या हुई है, उसे वाच्य कहते हैं।

(ख) जो शब्द सं ्ज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताते हैं उन्हें संबंधबोधक कहते हैं। जैसे; आपकी किताबे मेज़ पर रखी हैं।

(ग) जब भी कोई पद समूह वाक्य में संज्ञा का काम करता है, वह संज्ञा पदबंध कहलाता है।

(घ) किसी भी वाक्य के दो अंग होते हैं- उद्देश्य और विधेय।

(ङ) ऐसे वाक्यांश जो अपने सामान्य अर्थ के स्थान पर अपना विशेष अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें मुहावरा कहते हैं तथ हमारे वर्षों के अनुभव के सार को लोकोक्तियां कहावत कहते हैं।

2. अनुप्रास	उपमा	रूपक
3. (क) ओष्ठ	नारिकेल	अग्नि
उष्ट्र	प्रस्तर	अक्षि
(ख) समाधान, हल जोतने का यंत्र		आम का फल, रंज

चिट्ठी, पत्ता जवाब, दिशा का नाम

प्राण, बादल लाभ, पेड़ का फल

4. दावानल अद्वितीय सर्वज्ञ

अविश्वसनीय अतिथेयि

5. तुलसीदास जी को 'गोस्वामी' भी कहा जाता है।

अध्यापिका ने कहा, "अपनी हिंदी की पाठ्यपुस्तक खोलो"।

अरे! देखो, देखो सामने बहुत लोग इकट्ठे हैं।

मधुर, मनोहर, सरिता और नेहा समूहगान (कोरस) गा रही हैं।

6. आप: नमस्ते सर, क्या आप मुझे एक समस्या में मदद कर सकते हैं?

शिक्षक: हाँ जरूर, कृपया अपनी समस्या बताएं।

आप: सर, मुझे अंग्रेजी में बोलने में बहुत असुरक्षित महसूस होता है। मैं नहीं जानता कि मैं क्या गलती कर रहा हूँ।

शिक्षक: ठीक है, यह काफी सामान्य समस्या है। आपको यह समस्या दूर करने के लिए, अधिक से अधिक अंग्रेजी बोलने का प्रयास करना चाहिए और अगर आपको कोई समस्या होती है, तो आप मुझसे पूछ सकते हैं।

आप: धन्यवाद सर, मैं इसका अभ्यास करने की कोशिश करूंगा।

शिक्षक: अच्छा है, आपको अंग्रेजी में बातचीत करने में समस्या नहीं होगी।

विद्यार्थी: ठीक है, धन्यवाद सर।

7. (क) iv

(ख) ii

(ग) ii

(घ) iv